

दया एवं परोपकार

★वर्तमान समय में जब किसी के पास किसी के लिए बिल्कुल समय नहीं है किसी के दुख परेशानी को देखकर सहायता भाव का ना होना असंभव सा ही लगता है।

आजकल लोग कसी को कष्ट में देखकर उसकी सहायता के बारे में नहीं सोचते बल्कि अपने समय अभाव को बहाना बनाकर वहां से जाना ही बेहतर मानते हैं।

आज कसी के कष्ट से कसी को कोई मतलब नहीं है ऐसे समय में मूल्यों के समुचित विकास की बहुत आवश्यकता है दया और परोपकार जैसे मूल्य ही संवेदनशीलता और सहायता भाव का संरक्षण कर सकते हैं।

दया के लिए कहा गया है क दया एक ऐसी भाषा है जो गूंगा बोल सकता है, बधर सुन सकता है और अंधा देख सकता है।

◆दया और परोपकार की परिभाषा

"दूसरों के दुख को महसूस करना दया है"

और

"दूसरों के दुख को अपना मान कर निःस्वार्थ उसकी सहायता करना ही परोपकार है"

" सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया" के पीछे भी परोपकार की भावना ही प्रतिफल के रूप में है। परोपकार सहानुभूति का भी पर्याय है। "स्व"की संकुचित भावना से ऊपर उठकर "पर" के निमित्त बलदान करने को प्रेरित करना ही परोपकार है।

◆ परोपकार और दया के लाभ

- ★ परोपकार से हृदय में उदारता की भावना पनपती है।
- ★ किसी के प्रति द्वेष तथा ईर्ष्या नहीं होती।
- ★ दूसरों के सुख दुख में सहभागिता करने से आत्म संतुष्टि मिलती है।
- ★ विरोधी और शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

◆ दया एवं परोपकार का महत्व

- ★ दया एवं परोपकार से ही प्रेम, अनुराग, करुणा एवं सहानुभूति जैसे मूल्यों का संरक्षण संभव है।
- ★ संवेदनशीलता और सहायता भाव का संरक्षण दया और सहनशीलता से ही किया जा सकता है।
- ★ आत्मअवशोषित होने से दया और सहनशीलता ही बचा सकते हैं।

" जो व्यक्ति कसी व्यक्ति का भला नहीं कर सकता वह पशु समान ही होता है। ऐसे व्यक्ति आत्मअवशोषित होते हैं जो क सर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं, वह आत्ममुग्ध होते हैं, एकांत प्रय होते हैं और कसी की सहायता करना उनके स्वभाव में नहीं होता। लोगों के प्रति वनम्र और मैत्रीपूर्ण व्यवहार होना तथा उनकी सहायता करना ही दयालु होने के लक्षण है।

अनीता शुक्ला

वाराणसी

